

रामायण

लघु स्क्रिप्ट

दृश्य 1

रोशनी। महल के बगीचे। राम और सीता मंच में प्रवेश करते हैं। वे इधर-उधर घूमते हैं, बात करते हैं और हंसते हैं जैसे कि कथाकार बोलता है। पृष्ठभूमि में पक्षियों को सुना जा सकता है।

कथावाचक १: एक बार की बात है, एक महान योद्धा राजकुमार राम थे, जिनकी सीता नाम की एक सुंदर पत्नी थी।

राम और सीता चलना बंद कर देते हैं और मंच के बीच में खड़े हो जाते हैं।

सीता: (आकाश की ओर देखते हुए) कितना सुंदर दिन है।

राम: (सीता की ओर देखते हुए) आपकी सुंदरता की तुलना में कुछ भी नहीं है।

सीता: (मुस्कराते हुए) चलो चलते हैं।

राम और सीता मंच के चारों ओर घूमते रहते हैं, बात करते हैं और हंसते हैं क्योंकि कथाकार जारी रहता है।

कथावाचक १: राम राजा के ज्येष्ठ पुत्र थे। वह एक अच्छे इंसान थे और देश के लोगों के बीच लोकप्रिय थे। वह एक दिन राजा बनेगा, हालाँकि उसकी सौतेली माँ चाहती थी कि उसके बेटे को उसके बदले सिंहासन विरासत में मिले।

राम की सौतेली माँ मंच में प्रवेश करती है।

रमा की सौतेली माँ: (गुस्से में) तुम दोनों किस बात से इतने खुश हो?

रमा: हम इस खूबसूरत सुबह का आनंद ले रहे हैं। सौतेली माँ, आज तुम कैसी हो?

राम की सौतेली माँ: तुम क्यों परवाह करते हो, राम? (उसकी सांस के तहत जैसे ही वह मंच छोड़ती है) मुझे तब तक खुशी नहीं होगी जब तक वह लड़का नहीं जाता।

रमा: मुझे आशा है कि मैंने उसे परेशान नहीं किया?

सीता: आप एक दयालु व्यक्ति हैं और जानबूझकर किसी को परेशान नहीं करेंगे।

राम और सीता मंच छोड़ते हैं और रोशनी करते हैं।

दृश्य 2

लाइट्स अप। महल के अंदर। राजा अपने सिंहासन पर विराजमान है और उसकी पत्नी उसके पास खड़ी है।

रमा की सौतेली माँ: मेरे प्रिय, मैं अभी-अभी बगीचों से आया हूँ।

राजा: क्या आपको अपने चलने में मज़ा आया?

रमा की सौतेली माँ: दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है कि आपका बेटा मुझसे बहुत रूखा था... फिर। वह एक दिन राजा बनने के बारे में उत्साहित था और मुझे जंगल में भगाने की धमकी दी।

राजा: राम ने कहा? नहीं, वह नहीं कर सकता था।

राम की सौतेली माँ: क्या आप कह रहे हैं कि आपको अपनी प्यारी पत्नी पर विश्वास नहीं है?

राजा: आई एम सॉरी डियर, मैं इसके लिए बहुत बूढ़ा और थका हुआ हो रहा हूँ। क्या मिला है उस लड़के में? हफ्तों तक, आपने मुझे बताया है कि वह कितना घमंडी और मतलबी हो गया है। शायद वह आखिर एक अच्छा राजा नहीं बनेगा?

रमा की सौतेली माँ: मुझे भी ऐसा ही डर लगता है।

राम और सीता प्रवेश करते हैं।

राम: (प्रसन्न और प्रणाम) सुप्रभात पिता!

सीता: (अभिशाप) सुप्रभात महाराज।

राजा: राम, मुझे पूछना चाहिए कि आप हाल ही में इतने घमंडी क्यों हो गए हैं? आप इस बात से खुश हैं कि कैसे आप एक दिन राजा बनेंगे। भविष्य के राजा को ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए!

राम : क्या ? मुझे समझ नहीं आ रहा है।

राजा: मैंने सोचा था कि आप एक दयालु, समझदार राजा बनावेंगे लेकिन मुझे डर है कि आप ऐसा नहीं करेंगे। मुझे लगता है कि भूमिका के लिए कोई बेहतर है।

राम: लेकिन...

राम की सौतेली माँ: (राम को बाधित करते हुए) हर कोई राजा बनने के लिए नहीं काटा जाता है, राम।

राम: यह तुम हो! आप मेरे पिता के दिमाग में विचार डाल रहे हैं। तुम भयानक औरत!

राजा: (गुस्से में)) बस! मैंने काफी सुना है। राम, यह मेरी पत्नी से बात करने का कोई तरीका नहीं है। मैं तुम्हें 14 वर्ष के लिए वन में भगा देता हूँ। तब तक मैं चला जाऊँगा और एक नया राजा राज्य करेगा। तुरंत चले जाओ! (मंच से बाहर तूफान)

राम अपने हाथों में सिर रखकर घुटनों के बल गिर जाते हैं। सीता उसे दिलासा देने की कोशिश करती है। यह देखकर रमा की सौतेली माँ हँसती है और मंच छोड़ देती है।

लाइट्स डाउन

सीन 3

लाइट्स अप। राम और सीता सावधानी से जंगल में घूम रहे हैं, इधर-उधर देख रहे हैं। राम के भाई लक्ष्मण आगे चल रहे हैं। बैकग्राउंड में जंगल की आवाजें सुनी जा सकती हैं।

रामा: भाई, हमारे साथ यात्रा करना आपकी तरह है।

लक्ष्मण : पिता ने बहुत बड़ी भूल की है। उसके विचारों में उस स्त्री ने जहर घोल दिया है। मैं इस जंगल को अच्छी तरह जानता हूँ और घर बनाने में आपकी मदद कर सकता हूँ।

सीता: हम आपकी दया के लिए हमेशा आभारी हैं, लक्ष्मण।

लक्ष्मण: जंगल एक जंगली और खतरनाक जगह है, अपना कदम देखो।

राम, सीता और लक्ष्मण मंच से बाहर निकलते हैं और रोशनी करते हैं।

दृश्य 4

रोशनी। लंका द्वीप पर रावण का महल। रावण अपने सिंहासन पर विराजमान है।

कथावाचक २: लंका द्वीप पर एक भव्य महल था। महल में रावण नामक दस सिरों वाला एक राक्षस-राजा रहता था। पूरे देश में रावण का भय व्याप्त था।

रावण: (उनके सिंहासन से खड़े होकर) मुझे सीता को ढूंढना चाहिए और उनकी सुंदरता को अपने लिए देखना चाहिए। वह मेरी पत्नी होनी चाहिए क्योंकि मैं सबसे शक्तिशाली हूँ। चूंकि लोग मुझसे इतना डरते हैं, और ठीक ही ऐसा है, मैं उसे अपने सच्चे स्व के रूप में प्रकट नहीं कर सकता। मुझे एक चालाक योजना की जरूरत है।

कथावाचक २: रावण ने कुछ और सोचा।

रावण: (हार्थों को आपस में रगड़ते हुए/चालाक आवाज) हाँ, बस! मैं अपना भेष बदलकर उसे पकड़ लूंगा। वह हमेशा के लिए मेरी होगी!

रावण मंच से बाहर निकलता है और रोशनी करता है।

दृश्य 5

रोशनी। सीता और राम वन में घूम रहे हैं। उनके रास्ते में एक सुनहरा फॉन दिखाई देता है।

सीता: (फुसफुसाते हुए और इशारा करते हुए) राम, देखो वहाँ पर एक झींगा है, चलो इसे डराओ मत।

राम: (फुसफुसाते हुए) क्या सुंदर प्राणी है। इसने जंगल को जीवन से भर दिया।

फॉन मंच से बाहर निकल कर भाग जाता है।

सीता: राम, कृपया इसे मेरे पास वापस लाओ। मुझे इसकी सुंदरता पर एक और नजर डालनी चाहिए।

राम: मेरी पत्नी के लिए कुछ भी।

राम मंच से बाहर निकलते हैं और सीता खुशी-खुशी जंगल की सफाई करते हुए अपने परिवेश में घूमती हैं। रावण मंच पर प्रवेश करता है, लंगड़ाता है और एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में वेश धारण करता है।

रावण: क्षमा करें मेरे प्रिय, मैं एक थका हुआ, बूढ़ा आदमी हूँ जो अपना रास्ता भटक गया है। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?

सीता: हाँ, ज़रूर मैं आपकी मदद करूँगी।

रावण: मुझे नहीं लगता कि मैं ज्यादा आगे चल सकता हूँ।

सीता: मेरे साथ कुछ देर आराम करो, और फिर मैं तुम्हें अपना रास्ता खोजने में मदद करूँगी। चिंता मत करो।

सीता उसकी ओर चलती है, रावण अपना लबादा हटाता है, इसका इस्तेमाल सीता को पकड़ने के लिए करता है। वह चिल्लाती है और संघर्ष करती है क्योंकि रावण उसे ले जाता है। वह अपना एक कंगन नीचे फेंक देती है। दोनों स्टेज से बाहर निकलते हैं।

राम मंच पर दौड़ता है, फुफकारता और फुसफुसाता है।

राम: सीता, तुम कहाँ हो? सीता? फॉन पेड़ों में गायब हो गया। (राम नीचे देखता है और अपना कंगन देखता है) यहाँ एक संघर्ष था। (राम मायूस होकर जमीन की ओर देखते हैं) सीता, तुम कहाँ हो? रुको, वह क्या है जो मुझे दूर से चमकता हुआ दिखाई दे रहा है?

राम मंच से बाहर निकलते हैं और रोशनी करते हैं।

दृश्य 6

रोशनी। सीता के आभूषणों का पीछा करते हुए राम और लक्ष्मण वन में हैं।

रमा: मेरे खोज भाई के साथ मेरी मदद करने के लिए धन्यवाद।

लक्ष्मण: यहाँ एक और टुकड़ा राम है। वह अवश्य ही एक निशान छोड़ गई होगी।

राम: हाँ, वह जरूर सीता का कंगन है। देखते रहो।

हनुमान प्रवेश करते हैं।

हनुमान: राम, क्या तुम ठीक हो? आप बहुत चिंतित दिख रहे हैं।

राम: हनुमान, मैं हूँ। कुछ गड़बड़ है। सीता मुझसे छीन ली गई है।

हनुमान: अरे नहीं! चिंता मत करो मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। आप अपने राम पर नहीं हैं।

राम, लक्ष्मण और हनुमान मंच से बाहर निकलते हैं।

कथावाचक ३: हनुमान सीता की खोज में उड़ गए। उसने उसके गहनों के निशान देखे और इस उम्मीद में उसका पीछा किया कि यह राजकुमारी तक ले जाएगा। पगडंडी उसे तूफानी समुद्र के पार लंका द्वीप पर रावण के महल तक ले गई। हनुमान ने सीता को पाया और उन्हें आश्वस्त किया कि वह बच जाएगी।

राम और लक्ष्मण सीता को खोजते हुए मंच पर वापस आ गए।

राम/लक्ष्मण : सीता ! सीता! आप कहाँ हैं? सीता! सीता! (हताशा में)

हनुमानप्रवेश

राम मेंकरते हैं: हनुमान, क्या आपको खबर है?

हनुमान: हाँ, सीता को रावण ने पकड़ लिया है और उन्हें लंका द्वीप पर उनके महल में, जंगली समुद्र के पार रखा जा रहा है।

राम: रावण, राक्षस-राजा? अरे नहीं, क्या वह ठीक है? कृपया मुझे बताएं कि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ है।

हनुमान: वह ठीक है, लेकिन हमें जल्दी करनी चाहिए। मैंने उसे आश्वस्त किया कि हम लौट आएंगे। जल्दी से मेरे पीछे आओ।

राम, हनुमान और लक्ष्मण मंच से बाहर निकलते हैं और रोशनी करते हैं।

दृश्य 7

राम, लक्ष्मण और हनुमान पानी के किनारे खड़े हैं। दूसरी तरफ रावण का महल है।

रमा: (निराश होकर) मैं इसे वहाँ पार नहीं कर सकता। यह बहुत दूर है। हम क्या करने वाले हैं?

लक्ष्मण: मैं आगे बढ़ जाता, लेकिन पानी बहुत गहरा है और ज्वार बहुत तेज है। डूब जाऊंगा भाई।

हनुमान: (सीटी बजाते हुए)

बंदर आते हैं, राम और लक्ष्मण के लिए पानी पर एक पुल बनाते हैं।

हनुमान: अब तुम सुरक्षित पार कर सकते हो। जाओ, खोने के लिए एक सेकंड नहीं है। हम सब आपके साथ हैं।

लक्ष्मण: राम, हमें जल्दी करना चाहिए।

राम: धन्यवाद हनुमान, मैं तुम्हें कभी कैसे चुकाऊंगा?

राम, लक्ष्मण और हनुमान पुल पर अपना रास्ता बनाने लगते हैं। दूसरी तरफ पहुंचते ही वे मंच से बाहर निकल जाते हैं।

लाइट्स आउट

सीन 8

लाइट्स अप। राम और सीता मंच में प्रवेश करते हैं। वे जंगल के किनारे पर खड़े हैं और दूरी में अपनी मातृभूमि देख सकते हैं। पथ प्रकाशित हो चुकी है।

सीता: 14 साल हो गए, अब हम अपने सही घर लौटते हैं।

रामा: हम किस रास्ते जाते हैं?

सीता: हमें रोशनी का पालन करना चाहिए। रोशनी हमें राह दिखाएगी।

राम : इस मार्ग पर जितने प्रकाश हैं, उससे कहीं अधिक आकाश में हैं।

राम और सीता रास्ते में चलते हैं और फिर मंच से बाहर निकलते हैं।

कथावाचक ४: अपने वतन के लोगों को भी एहसास हो गया था कि १४ साल बीत चुके हैं। यह एक अंधेरी रात थी, इसलिए उन्होंने राम और सीता को घर वापस आने का रास्ता दिखाने के लिए दीये जलाए। उनकी वापसी पर, विशाल उत्सव हुए और राम और सीता को सही राजा और रानी का ताज पहनाया गया। प्यार की इस कहानी और बुराई पर अच्छाई की जीत को याद करते हुए हिंदू हर साल दिवाली मनाते हैं।

समाप्त